Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 1 - 2019

रामचरित मानस की विश्वव्यापी: आधुनिक प्रासंगिकता

डॉ निधि कश्यप*

समाज के ऊपर साहित्यकार का जो ऋण है वह किसी तरह नहीं भुलाया जा सकता। यह हम भारतवासियों का सौभाग्य ही है कि हमें उज्जवल साहित्यकारों की एक लम्बी परंपरा मिली है। यह और भी सौभाग्य की बात है कि वह परंपरा ऐसे महर्षि से प्रारंभ हुई है। जो अपनी प्रतिभा में, अपनी शक्ति में और अपनी सक्रियता में आज तक अद्‌वितीय है। कवि-कुलगुरु कालिदास तक ने कहा है जिसका आहत क्रौंच पक्षी के लिए उमड़ा हुआ कारुण्य भी श्लोक के रूप में निकल पड़ा, उस आदि कवि का नाम था "वाल्मीकि"।

वाल्मीकि जी ने अपने काव्य का नायक चुना मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को और उनके चरित्र का इतनी विशालता और व्यापकता के साथ और इतने आकर्षक स्वरों में गायन किया कि देखते-देखते वह संगीत, अकिंचन की कुटिया से राज-भवनों तक व्यापक हो गया। वह भारत में ही सीमित न रह कर संसार के दिग्विजय के लिए भी निकल पड़ा। शायद ही भारत का कोई प्रदेश या विश्व का ऐसा कोई सम्य देश न होगा,जहाँ मूल अथवा अनुवाद के रूप में वाल्मीकीय रामायण अब तक न पहुँच पाई हो। यह भारत लिए सबसे बड़े गौरव की बात है।

आधुनिक समीक्षक रामकथा लिखे जाने के समय का निर्धारण अलग-अलग बतलाते है, लेकिन वाल्मीकी रामायण के सप्तचत्वारिश सर्ग के श्लोक क्रमांक 15 को मैं यहाँ उललेखित करना चाहूँगी। यह प्रसंग तब का है जब माता सीता लोकापवाद की धुंध में घिरी हुई थीं। रामजी की आज्ञा से लक्ष्मण उन्हें वाल्मीकी जी के आश्रम में छोड़ आने की आज्ञा देते हैं. गंगा तट पर महर्षि के आश्रम के निकट पहुँचकर लक्ष्मण सीताजी से कहते हैं- **"शुभे! यह रहा गंगाजी के तट पर ब्रह्म महर्षियों का पवित्र एवं रमणीय तपोवन। आप विषाद न करें।"** वे आगे यह भी कहते हैं।..."**राज्ञो दशरथस्यैव पितुर्मे मुनिपंगवः सखा परमको विप्रो वाल्मीकिः सुमहायशाः पादच्छायामुपागम्य सुखमस्य महात्मनः उपवासपरैकाग्ना वस त्वं जनकात्मजे।**" अर्थात यहाँ मेरे पिता राजा दशरथ के घनिष्ट मित्र महायशस्वी ब्रह्मर्षि मुनिवर वाल्मीकि रहते हैं, आप उन्हीं महात्मा के चरण की छाया का आश्रय ले यहाँ सुखपूर्वक रहें। जनकात्मजे! आप यहाँ उपवास परायण और एकाग्र हो निवास करें। इसी आश्रम में सुखपूर्वक रहते हुए सीताजी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। **"यामेव रात्रि शत्रुघ्न पर्णशाला समाविशत तामेव रात्रिं सीतापि प्रसूता दारकद्दयम"** अर्थात जिस रात को शत्रुघ्न ने पर्णशाला में प्रवेश किया था, उसी रात में सीता जी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। इतना ही नहीं इन दो राजकूमारों ने राजा राम के दरबार में रामचरित का गान सुनाया, जिसे सुनकर राजदरबारियों सहित श्रीरामजी को भी आश्चर्य हुआ था।

*एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पी.पी.एन. (पी.जी). कॉलेज, कानपुर

Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

चतुर्नवतितम सर्ग के **श्लोक क्रमांक 4-तां स शुश्राव काकुत्स्थः पूर्वाचार्यविनिर्मिताम आपूर्वा पाठ्यजातिं च गेयेन समलं ताम।** अर्थात श्रीरघुनाथजी ने वह गान सुना, जो पूर्ववर्ती आचार्यों के बताए हुए नियमों के अनुकूल था। संगीत की विशेषताओं से युक्त स्वरों के अलापने की अपूर्व शैली थी। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महर्षि वाल्मीकि जी श्री रामजी के समकालीन थे उन्होंने वही लिखा जो वे अपनी आँखों देख रहे थे।

इस रामकथा ने इतना विस्तार पा लिया था कि लोग कह उठे थे कि वह काव्य नहीं जिसमेंरामकथा न हो, वह पुराण नहीं जिसमें रामकथा न हो, वह इतिहास नहीं जिसमें रामकथा न हो और वह संहिता नहीं जिसमें रामकथा न हो। **"न तद काव्यं नहि यत्र राम: न तत पुराणं नहि यत्र राम न चेतिहासो नहि यत्र रामः, न यत्र रामो नहि संहिता सा"**|

इस प्रकार धार्मिक साहित्य और ललित साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में रामकथा गायी और लिखी गयी।

रामतापयोपनिषद, रामरहस्योपनिषद, मुक्तिकोप-निषद, हरिवंशपुराण, विष्णु पुराण, भुशुण्डिरामायण, सत्योपाख्यान सदृश धार्मिक ग्रंथों में और रघुवंश, भट्टिकाव्य, रामलिंगामृत, प्रतिमा नाटक, महावीर चरित, उत्तररामचरित, अनर्घराघवम, बालरामायण, हनुमन् नाटक, आश्चर्यचूड़ामणि, प्रसन्त्राघव, उन्मत्त राघव, प्रभूति लालित साहित्य के ग्रंथों में सुसंस्कृत भाषा से संबद्ध होकर रामकथा राम-साहित्य का विस्तार कर रही है।

संस्कृत युग के बाद और अपभ्रंश के युगों में भी रामकथा पर अनेकों ग्रंथों की रचना हुई हैं, विमलदेव सूरि का पउम चरियं, स्वयंभूदेव का पउम चरितंम, पुष्पदंत का महापुराण रघू कृत पद्म पुराण, आदि के नाम इस संबंध में लिए जा सकते हैं। तदनन्तर प्रचलित प्रांतों की अपनी-अपनी भाषाओं में रामकथा अथवा रामायण का विपुल साहित्य निर्मित हुआ। तमिल भाषा में कम्ब रामायण का निर्माण ईसा की बारहवीं शताब्दी में हुआ।

तेलुगु भाषा में रंगनाथ, रामायण, तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में रची गई मलयालम भाषा में रामचरितम, चौदहवीं शताब्दी में कन्नड़ भाषा में तोरवे रामायण, सोलहवीं शताब्दी में असमिया भाषा में माघव कंदली, चौदहवीं सदी के आसे एक रामायण लिखी गई जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुई, बंगला भाषा में कृत्तिवस पन्द्रहवीं सदी के अंत में एक रामायण लिखी जो उनके नाम से प्रसिद्ध हुई, उड़िया भाषा में पन्द्रहवी शताब्दों सारलदास ने और सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में बलरामदास ने रामायण लिखी जो उन्हों के नाम से प्रसिद्ध हुई। ये सभी रामायण तुलसीदास जी के पूर्व में लिखी हुई कही जा सकती है। सोलहवी शताब्दी के अंत में एकनाथ महाराज ने मराठी में भावार्थ रामायण लिखी। गुजराती भाषा में उन्नीसवीं शताब्दी में गिरधरदास जी ने रामायण लिखी और इसी शताब्दी में मुंशी जगलाय सुर ने उर्दू भाषा में रामायण लिखी। रामायण लेखकों की फेहरिस्त काफी लंबी है। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि प्रभु श्रीराम, न केवल भारतवर्ष में बल्कि पूरे विश्व में पूजे जाते थे। सबसे बड़ी समस्या यह थी तुलसीदास जी के सामने कि वे किस माध्यम से भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत करें। वे नहीं चाहते थे कि शंकराचार्य की तरह संस्कृति के मात्र दार्शनिक पक्ष को प्रमुखता दें। उन्होंने लोकरंजक रामकथा जिसमें रावण भी था, को जनभाषा के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

भारतीय संस्कृति की झाँकी जो लोकरंजक कथा के माध्यम से हमारे बीच आयी, उसका जनमानस ने पुरजोर स्वागत किया। उन्होंने वर्णाश्रम तथा अन्य भारतीय पारम्परिक व्यवस्थाओं के आधार पर, जो देशकाल के अनुरूप थी, संस्कृति को हमारे सामने रखा। इसमें प्रजा के क्या कर्तव्य होने चाहिए, राजा के क्या कर्तव्य होने चाहिए और राजधर्म क्या होना चाहिए, समाज की व्यवस्था किस प्रकार की होनी चाहिए, जनहित की भावनाओं को किस प्रकार पोषित किया जाना चाहिए, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपका यह एक अति महत्वपूर्ण कार्य था।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्य समन्वय का था। समाज में प्रचलित वैदिक पौराणिक धारा, जो भारतीय संस्कृति का मेरुदंड कही जा सकती है। दूसरी तंत्र संप्रदाय की और तीसरी निर्गमुण विचारधारा की थी, जो पौराणिक से पृथक अनेकों रूपों में विद्यमान थी और चौथी विचारधारा सुफी विचारधारा। जो मध्य एशिया तथा ईरान से हमारे बीच आयी थी। संत कवि तुलसीदास जो ने उस समय अपने मूल वैदिक स्त्रोत को ग्रहण किया जो देशकाल के अनुरूप अन्य धाराओं में श्रेष्ठ थी, उसे ग्रहण करने की बात की। समन्वय का महत्वपूर्ण कार्य गोस्वामी जी के काल में हुआजो राजनैतिक परिस्तिथियां थी वह हिन्दुओं के अनुकूल हो गयी।

अकबर स्वयं समन्वयवादी था लेकिन उसे इस दिशा में ज्यादा सफलताएँ प्राप्त नहीं हुई थी जितनी की गोस्वामी तुलसीदास जी को मिली। उन्होंने तत्कालीन विभिन्न प्रवृत्तियों की अच्छाइयों को लेकर एक समन्वित जीवन-दर्शन हमारे सामने रखा। और प्रांजल भक्ति का मार्ग अपनाने को कहा। इस समय ज्ञान-मार्ग या कहें कठोर कर्ममार्ग था, जो लोगों को सध नहीं पा रहा था, इसलिए उन्होंने प्रांजल-भक्ति को हमारे सामने रखा। इस मार्ग को कोटि-कोटि मानवों को गहराई से प्रभावित किया। तुलसीदास जी का यह एक बड़ा महत्वपूर्ण काम था, और वह था अपनी जन-भाषा को महत्व प्रदान करना। ईसवी चौथी शती से लेकर सोलहवीं शती तक संस्कृत हमारे देश की भाषा रही है। इससे पहले हमारे यहाँ वैदिक भाषा राष्ट्रभाषा थी। उसके बाद पाणिनीय संस्कृत हमारी राष्ट्रभाषा रही। गुप्तवंशी सम्राट ने संस्कृत को पूरे देश की राष्ट्रभाषा बनाया। उसके बाद तुलसी के द्वारा हिन्दी को वस्तुतः राष्ट्रभाषा का पद दिया गया। यद्यपि वे संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। उन्होंने रामचरित मानस में संस्कृत का सीमित प्रयोग किया और जनभाषा को अधिक स्थान देते हुए उसे गौरव प्रदान किया। वे राज दरबारी कवि नहीं थे। शायद होते तो वे निर्भकता के साथ लिख नहीं पाते और एक जीवन-दर्शन का जो निर्माण उन्होंने करना चाहा था, शायद ही कर पाते। उन्होंने निर्भीकता के साथ भारतीय संस्कृति को सामने रखा। यह वह संस्कृति थी जिसे हम प्राचीन काल से पाते हैं। भारतीय संस्कृति के जिस व्यापक रूप को गोस्वामीजी ने विवेचना के लिए चुना उसमें राम के चरित्र को ही क्यों अपनी लेखनी का माध्यम बनाया? वे किसी प्राकृत जन को ले सकते थे या फिर भगवान के किसी और स्वरूप कोले सकते थे, लेकिन उन्होंने राम को ग्रहण किया क्यों कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे। तुलसीदास जी ने इसे युक्तिसंगत समझा और रामचरित को ही संस्कृति की व्याख्या-हेतु माध्यम बनाया। यहाँ और यह समझने की जरूरत है कि श्रीकृष्ण जी का चरित अत्यन्त ही दुरूह है। अतः तुलसीदासजी को राम का उद्दात्त लोक-संग्राहक रूप विशेष रूप से भाया। उन्होंने देखा कि राम, पुरुषोत्तम होते हुए भी आदर्श जीवन दर्शन के लिए सबसे

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

अधिक उपयुक्त हैं। उन्होंने स्वयं देखा भी कि राम-चरित ने न केवल भारत में ही अपना प्रभाव जमा लिया था बल्कि भारत के बाहर भी दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों में रामकथाएँ अनेक रूपों में प्रचलित हो चुकी थी।

इंडोनेशिया विश्व का एक छोटा सा देश है जिसमें दुनिया के सबसे ज्यादा मुस्लिम इंडोनेशिया में ही रहते हैं। इंडोनेशिया के लोग "रामायण" के दीवाने हैं। यहाँ रचित रामायण का नाम ककबिनरामायण है, यहाँ के लोग भगवान राम की एक महान इंसान के रूप में पूजते है। इस देश की कुल आबादी लगभग 23 करोड़ है और यहाँ की कुल आबादी के तकरीबन 90 प्रतिशत मुस्लिम हैं... जैसे कि हमारे भारत में राम की नगरी अयोध्या है। ठीक उसी तरह से इंडोनेशियाई भी एक जगह राम की नगरी है जिसे योग्या के नाम से जाना जाता है। जैसा कि हमारे देश हिन्दुओं में रामायण के प्रति काफी आस्था है और लोग काफी श्रद्धा से इसपर विश्वास करते हैं। वैसे ही इंडोनेशिया के जो लोग हैं उन्हें भी रामायण में काफी आस्था है और यहाँ के लोग राम को एक महान राजा के रूप में मानते हैं। भारत लोग जो आदिकवि ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत भाषा में लिखी गयी रामायण को मानते हैं। वैसे ही इंडोनेशिया के मुस्लिम लोग कावी भाषा में लिखी सेरतराम, सेरत कांड, राम केलिंग रामायण को मानते हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इंडोनेशिया में नौसेना अध्यक्ष को "लक्ष्मण कहा जाता है। साथ ही यहाँ के लोग माँ सीता को 'सिंता' और भगवान् श्री हनुमान को 'अनोमान' के नाम से पूजते है। इंडोनेशिया में तो भगवान् हनुमान सबसे ज्यादा ही लोकप्रिय हैं। जब यहाँ के लोग बड़ी संख्या में देश की राजधानी जकार्ता में सड़कों पर आजादी का जश्न मनाते हैं, उस वक्त हनुमान जी के रूप को लेकर परेड में सम्मिलित होते हैं। इस देश में रामायण का इतना गहरा प्रभाव है कि यहाँ की सारी संस्कृति ही रामायण की पारम्परिक श्रद्धा से जुड़ी हुईहै, साथ ही इस देश के कई जगहों में रामायण के अवशेष भी मिले हैं तथा रामकथा की नककाशी वाले पत्थर भी यहाँ मिलते हैं। इसी तरह **तिब्बत में तिब्बती रामायण, पूर्वी तुर्किस्तान की खोतानीरामायण, जावा का सेरतराम, सैरीराम, रामकेलिंग, पातानीरामकथा, इण्डोचायना की रामकेर्ति (रामकीर्ति), खमैररामायण, नेपाल के भक्त कवि की ष्मानुभक्त रामायणष्| कंबोडिया की रामकर, पूर्वी तुर्किस्तान की खतानी रामायण, जावा की सेरतराम, सरीराम, राकेलिण्ग, पातानीरामकथा, बर्मा की यूतोकी रामायण, रामवत्थु तथा महा राम रामायण। कंप्युचिया के अनेक शिलालेखों में रामकथा उकेरी गई है।** वियतनाम के एक प्राचीन शिलालेख में वाल्मीकि जी के मन्दिर का उल्लेख मिलता है, किंतु रामकथाएँ लोककथाओं के रूप में कही-सुनी जाती है। लाओस की संस्कृति पर भारतीयता की गहरी छाप है। परलाम (रामजातक), खाय थोरपी, ब्रहमचक्र और लंका नोई राम कथा पर आधारित चार रचनाएं उपलब्ध हैं।

थाईलैंड का रामकथा साहित्य बहुत समृद्ध है। **रामकथा पर आधारित निम्नांकित प्रमुख रचनाएँ वहाँ उपलब्धहैं- (1)) तासकिन रामायण, (2) सम्राट राम प्रथम की रामायण, (3) सम्राट राम द्वितीय की रामायण, (4) सम्राट राम चतुर्थकीरामायण (पद्यात्मक),) सम्राट रामचतुर्थ की रामायण (संवादात्मक), (6) सम्राट राम षष्ठ की रामायण (गीतिसंवादात्मक)| आधुनिक खोजों के अनुसार वर्मा में रामकथा साहित्य की 45 रचनाओं का पता चला है**

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

जिनमें रामवत्थु प्राचीनतम कृति है। मलयेशिया में रामकथा से संबद्ध चार रचनाएँ उपलब्ध है-

(1) हिकायत सेरी राम, (२) सेरी राम, (३) पातानी रामकथा और (४) हिकायत महाराज रावण।

फिलिपींस की रचना महालादिया लावन का स्वरूप रामकथा से बहुत मिलता-जुलता है, किंतु इसका कथ्य बिल्कुल विकृत हैं।

चीन में रामकथा बौद्ध जातकों के माध्यम से पहुँची थी। वहाँ अनामक जातक और दशरथ कथानम का क्रमश: तीसरी और पाँचवी शताब्दी में अनुवाद किया गया था। दोनों रचनाओं के चीनी अनुवाद तो उपलब्ध हैं, किंतु जिन रचनाओं का चीनी अनुवाद किया गया था, वे अनुपलब्ध हैं। तिब्बती रामायण की छह पांडुलिपियाँ तुन-हुआन नामक स्थल से प्राप्त हुई हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ राम कथा पर आधारित दमर-स्टोन तथा संघ श्री विरचित दो अन्य रचनाएँ। एशिया के पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित तुर्किस्तान के पूर्वी भाग को खोतान कहा जाता है। इस क्षेत्र की भाषा खोतानी है।

खोतानी रामायण की प्रति पेरिस पांडुलिपि संग्रहालय से प्राप्त हुई है। इस पर तिब्बत्ती रामायण का प्रभाव परिलक्षित होता है। चीन के उत्तर-पश्चिम में स्थित मंगोलिया में राम कथा पर आधारित जीवक जातक नामक रचना है। इसके अतिरिक्त वहाँ तीन अन्य रचनाएँ भी हैं जिनमें रामचरित का विवरण मिलता है।

जापान के एक लोकप्रिय कथा संग्रह होबुत्सुशु में संक्षिप्त रामकथा संकलित है। इसके अतिरिक्त वहाँ अंधमुनिपुत्रव्ध की कथा भी है। श्री लंका में कुमार दास के द्वारा संस्कृत में जान की हरण की रचना हुई थी। वहाँ सिंहली भाषा में भी एक रचना है, मलयराजकथाव। नेपाल में रामकथा पर आधारित अनेकानेक रचनाएँ जिनमें भानुभक्त कृत रामायण सर्वाधिक लोकप्रिय है। सम्राट अकबर ने सन् 4588 में रामायण का अनुवाद फारसी में करवाया था, जो आज जयपुर में संग्रहालय में सुरक्षित रूप से रखी हुई है। इसमें 476 चित्र बनाए गए हैं। इसी के साथ कतर के दोहा में भी मुगल रामायण है जो अकबर की माँ हमीदा बानो बेगम नें बनवाई थी।

इस तरह हम देखते हैं कि वालमीकि जी ने अपने "रामायण" ग्रंथ के प्रभाव से संसार को एक अत्यंत ही आकर्षक महापुरुष और एक अत्यन्त ही योग्य परिवार मिला। संत कवि तुलसीदास जी ने अपने "मानस-ग्रंथ" के प्रभाव से उस आकर्षक महापुरुष को जन-जन का इष्ट देव बना दिया। उनके राम न केवल कूटियों से राजमहल तक, आबाल-वृद्ध- वनिता सबमें रम गए। जिन लोगों ने रामकथा का साहित्य रचने हेतु कलाम उठाई वे राम के लोक-रंजक रूप पर नहीं किंतु लोकरक्षक के रूप पर ही अधिक आकृष्ट हुए।

मैं यहाँ तीन अलग अलग भाषाओं में लिखी रामकथा पर चर्चा करके इस बात पर बल देना चाहती हूँ कि धर्म भाषा के माध्यम से विकसित होता है और आदि ग्रन्थ ने मानवीयता के जिस ७ मार्ग को प्रशस्त किया, भाषाओं के परिवर्तन और सहज प्रवाह से उस मार्ग का विकास जिसके आधार पर है। एक प्रश्न यह भी है कि राम को विष्णु के अवतार के रूप में देखा जाता है और ईश्वर हर युग में अवतार लेता है तो क्या राम कथा कभी समाप्त हो सकती है? राम कथा के विकास के रूप में महाभारत का अध्ययन प्रस्तावित किया जाता है जो युग परिवर्तन का ही द्योतक नहीं है बल्कि राम को कृष्ण के रूप में देखने की दृष्टि भी प्रदान करता है। राम जो मर्यादावादी है वह कृष्ण के

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

रूप में आते हैं और लीलाधर बनते हैं। इस कथा का विस्तार यहाँ तक है कि कलियुग में विष्णु कल्कि अवतार के रूप में आकर मानवीयता की रक्षा करेंगे। इस आधार पर इस मानवीय विश्वास की रक्षा होती है कि:

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्|
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्|
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

25 जनवरी 1987 का दिन विशेष था क्योंकि टीवी पर रामायण धारावाहिक का प्रसारण आरम्भ हुआ। एक ऐसे काल में जब टीवी बहुत अधिक घरों में उपलब्ध नहीं था, इसके दर्शकों की संख्या 40 करोड़ से अधिक औंकी गई | इंडिया टुडे ने तो इस धारावाहिक के प्रभाव को देखते हुए इसे रामायण फीवर का नाम दिया बालपन की वह स्मृति आज भी सुरक्षित है जब रामायण आने पर सड़कों पर एक अजब सन्नाटा पसर जाता था और लोग समस्त कार्यों को छोड़कर टीवी के समक्ष बैठ जाते थे. टीवी की यह यात्रा साहित्य में तो अनवरत चली पर रंगमंच पर भी इस यात्रा ने मानव जीवन की अनेक छवियों को प्रस्तुत किया। आज जब हर एक घर में तकनीक के बढ़ते हाथों का प्रभाव है तब भी इस कथा को यू-ट्यूब के जरिए सर्वाधिक दर्शक मिल रहे है। राम की कथा के इन मानवीय सरोकारों की भाषा और संस्कृति के माध्यम से झलक प्रस्तुत करना ही यहाँ प्रधान उद्देश्य है।

रामचरित मानस विमल संतन जीवन प्रान। हिंदुआन को वेद सम, जमनहि प्रकट कुरान।।

सगुण भक्तिधारा में गोस्वामी तुलसीदास ने राम की भक्ति के माध्यम से जीवन और जगत में भक्ति को श्रेष्ठ सिद्ध कर दिया है। इस तरह से तुलसीदास ही रामकाव्य के प्रमुख कवि है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की मान्यता है कि ष्मारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी को कह सकते हैं तो इन्हीं तुलसीदास महानुभाव को। तुलसी लोक कवि, लोकनायक थे। उन्होंने अपने काव्य में लोक जीवन, लोक धर्म और लोक मंगल को विशेष स्थान दिया है। उन्होंने राम को अपना इष्ट बनाकर भक्ति का सीधा सरल रूप प्रतिपादित किया है और भक्तिमार्ग को पह ग्राह्म बना दिया है। इनकी वाणी की पहुँच मानुष के सारे भावों और व्यवहारों तक है।

दूसरी तरफ लोक, पक्ष में आकर पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों का सौन्दर्य दिखाकर वाणी मन को मुग्ध करती है। व्यक्तिगत है। साधना के साथ लोकधर्म की अत्यंत उज्ज्वल छटा उसमें विद्यमान गोस्वामी तुलसीदास जी ने लोकमंगल के उदात्त तत्व को महत्व दिया है "कीरति भनिति भूति भलि सोई सुरसरि सम सब कहँ हित होई" की विचारधारा से युक्त कवि ने दशरथ पुत्र राम को अवतारी पुरुष माना है। उनका जन्म दुखों को, पीड़ा को दूर करने के लिए ही होता है

"जब-जब होई धर्म के हानी। बाढ़हिं पूत अधम अभिमानी।।"
तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।"

ऐसे अवतारी पुरुष भगवान् राम सहजता से मानवीय जीवन जीते हुए समाज में लोकमंगल की प्रतिष्ठा करते हैं। गोस्वामी जी ने धर्म के क्षेत्र में व्याप्त शैव, वैष्णव सम्प्रदाय की मान्यताओं में सामंजस्य स्थापित किया है। दोनों सम्प्रदायों के आपसी विद्वेष और कलह को दूर करने हेतु तुलसीदास जी ने भरपूर

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

प्रयास किया है। एक तरफ **शिव के मुख से यह कहलवाया है कि ष्सोइ मम इष्ट देव रघुवीरा, सेवत जाहि सदा रघुवीरा।।** वहीं दूसरी तरफ राम द्वारा सेतु निर्माण पर शिव की आराधना, उपासना, प्रतिष्ठा, पूजा अर्चना में शिव के प्रति भक्ति दर्शाकर राम को शिव का अनन्य भक्त सिद्ध करते हुए कहा है ष्हरि हर पद रति मति न कुतर की इस प्रकार तुलसीदास जी ने शैव और वैष्णव सम्प्रदाय की विचारधाराओं को एक ही धरातल पर स्थापित करने का पूरा प्रयास किया। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने रामचरितमानस की सर्वागीणता को लक्ष्य करके कहा है।

रामचरितमानस का प्रधान विशेष तत्व यही है कि उसमें घर की ही बातें विस्तृत रूप से वर्णित छछ हुई हैं। पिता-पुत्र में, भाई-भाई में, स्वामी स्त्री में, जो धर्म बंधन है, और जो प्रीती और भक्ति का सम्बन्ध है, उसको मानस ने इतना महान बना दिया कि वह सहज ही जनमानस का ग्रन्थ बन गया। हिमालय जितने ऊँचे और व्यापक आदर्शों और सागर जैसे गंभीर विचारों का एक साथ किसी ग्रन्थ में समावेश हो पाया है तो वह मानस ही है। अपनी इसी विशेषता कारण देशकाल की सीमाओं को लॉघकर यह विश्व साहित्य की महान कृति के रूप में पूजा जा रहा है।

रामचरितमानस के प्रारम्भ में ही तुलसीदास जी ने अपना एक आदर्श प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर कवि ने समाज और व्यक्ति के जीवन के हर अंग को समेटा है और सहेजा है। जब हम रामकथा की बात करते हैं तो रामायण और रामचरित मानस तुरंत हमारे सामने आते हैं। क्योंकि इसके सातों कांडों में जीवन के विभिन्न स्तर पर होने वाले क्रिया-कलापों का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। बालकाण्ड में राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न के बाल स्वरूप का जो वर्णन है जैसे- घुटनों के बल चलना, मुँह में खाना लपेटना, कौए की परछाई को देखकर उसके पीछे भागना, माताओं का यह सब देखकर खुश होना, यह सब एक सामान्य सी बातें हैं, पर आज हम अपनी सांस्कृतिक चेतना को त्यागकर भौतिकता के पीछे भाग रहे हैं। आज क्या ये वात्सल्य भरा दृश्य माताएँ महसूस कर पा रही हैं। नहीं। आज हम बच्चों को मोबाईल और कम्प्युटर पकड़ा कर अनजाने में एक मशीनी संस्कार उसके अन्दर डाल देते हैं। वह उस खिलौने से सिर्फ खेलता ही नहीं वरन संस्कारित भी होता है परिणामतः संवेदनाएँ और कोमल भावनाओं का लोप हो जाता है।

अयोध्याकाण्ड में रामचंद्र जी को वनवास मिलने पर कौशल्या किसी प्रकार कुंठित नहीं होती, वह कैकयी से कुछ भी नहीं कहतीं, बस भवितव्यता मानकर धैर्य से सब ग्रहण करती हैं। श्री राम भी माता कैकयी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखते हैं और पिता के दुखभरे वचन सुनकर कहते हैं--

“सुनु जननी सोई सुत बड़भागी। जो पितु मातु वचन अनुरागी।।”

“तनय मातु-पितु तोष निहारा दुर्लभ जननी सकल संसारा ||”

ये भावना आज कहाँ लोप हो गयी है। भाई से भाई का अद्वितीय प्रेम रामकथा में हो मिलता हैं। बड़े भाई की सेवा करना, यह संस्कार हमें रामकथा के अलावा कहीं नहीं मिलता। इसका सुन्दर उदाहरण देखिये, लक्ष्मण को सुमित्रा उपदेश देते हुए कहती हैं

“सकल प्रकार विकार विहाई। मन क्रम वचन करेह सेवकाई ।।

जेहि न राम वन लहहि कलेस। सुत सोई करेहु इहहि उपदेसू ॥"

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

ये सब भावनाएँ और संस्कार आज हमें कहाँ दिखाई देते हैं इस तरह रामकथा की विरासत कई संस्कृतियों

में फैली हुई है। सच तो यह है कि रामकथा की विरासत किसी देश या समुदाय की नहीं बल्कि पूरी मानवता की है। यह हमें आपस में जोड़ती है और श्रेष्ठ मानव मूल्यों के साथ जीना सिखाती है।

निष्कर्ष

राम कथा जहाँ एक और आदर्श जीवन को परिभाषित करती है वहीं दूसरी ओर इसमें मानवीय संबंधों व अच्छाई-बुराई के ढेरों पसंग हैं जो सबको आकर्षित करते हैं तथा उसका अनुकरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह एक तरह का सांस्कृतिक दस्तावेज है। इतना समय बीत जाने के बाद भी इसके आकर्षण में कमी नहीं आई वरन दिन पर दिन इसके प्रति लगाव बढ़ रहा है। इस तरह रामकथा का समाज पर गहरा प्रभाव है। रामचरित लेखकों की कामधघेनु है जिस पर जितना अधिक लिखा जाए, आनंद की पयोनिधि और बढ़ती जाती है। रामकथा में स्थापित भाव जीवन कर्मजीवन की मर्यादायें चिरकाल से मानवीय श्रेष्ठता का मानदंड रही हैं तथा केवल भारतीय लोक मानस ही नहीं वरन अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण विश्व रामकथा से आदर्श जीवन की प्रेरणा प्राप्त कर रहा है और आगे भी करता रहेगा।

इससे जीवन को जीने की एक नई दृष्टि भी प्राप्त होती है कि समस्या होने पर कोई रक्षा अवश्य करेगा। साथ ही यह भी कि जीवन में मात्र सफेद और काला रंग ही प्रबल नहीं होता बल्कि अन्य रंगों का भी समान महत्त्व है. एक प्रश्न यह भी है कि जैसे जैसे हम आधुनिक होने का दावा अधिक करने लगे हैं, वैसे वैसे जड़ों को समझने की इच्छाएँ इतनी प्रबल होती क्यों दिखाई दे रही है? शायद हर भाषा और रचना के माध्यम से हम उस नैतिक दृष्टि की ओर झांकना चाहते हैं जो अब हमारे समाज से लुप्त होती जा रही है। इस प्रपत्र में मैं आधुनिक समसामयिक रामकथाओं को केंद्र में रख रही हूँ क्योंकि इसके माध्यम से मानवीय सरोकारों के वृहद प्रश्नों को किस प्रकार केंद्र में रखने का प्रयास किया गया है, इसे भी समझा जा सकेगा।

संदर्भ सूची

1. रामचन्द्रिका केशवदास, लाला भगवान दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में नारी भावना-डॉ. उषा पाण्डेय, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, 1989.
3. आधुनिक साहित्य, पत्रिका, साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी, अंक 33.34 वर्ष 9, जनवरी -जून 2020.
4. स्मारिका शोध संक्षेपिका, मानव मूल्यों के निर्वहन में रामकाव्य की भूमिका, जनवरी, 2020 जनभागीदारी समिति, शा.म.वि. बरही।
5. वाल्मिकि रामायण, रामचरित मानस-रामचरित मानस: एक विश्लेषण -संपादक डॉ. प्रभुदयालु अग्निहोत्री।
6. नेत्रपाल गुप्ता, गोस्वामी तुलसीदास, तुलसी सौरभ, सांस्कृतिक पत्रिका, तुलसी मानस संस्थान, जयपुर, अगस्त-सितम्बर, 2012.
7. भक्तिकालीन राम तथा कृष्णकाव्य की नारी भावना, एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. श्यामबाला गोयल, विभु, प्रकाशन दिल्ली सं. 496.
8. तुलसी गन्थावली-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 1980.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501